अध्याय
01

भारतीय गायिकाओं में बेजोड़: लता मंगेशकर

कुमार गंधर्व

© JCERT not to be republished

लेखक परिचय

- **जन्म–** 8 अप्रैल 1924
- **मृत्यु–** 12 जनवरी 1992
- जन्म स्थान-सुलेभावि, जिला बेलगांव, कर्नाटक
- **मूल नाम–** शिवपुत्र सढिदारमैया कोमकाली।
- 10 वर्ष की उम्र में गायकी की पहली मंचीय प्रस्तुति।
- सन 1977 में भारत सरकार द्वारा कला के क्षेत्र में पद्म भूषण से सम्मानित किया गया था।
- सन 1980 में भारत सरकार द्वारा कला के क्षेत्र में पद्म विभूषण से सम्मानित किया गया था।

पाठ परिचय

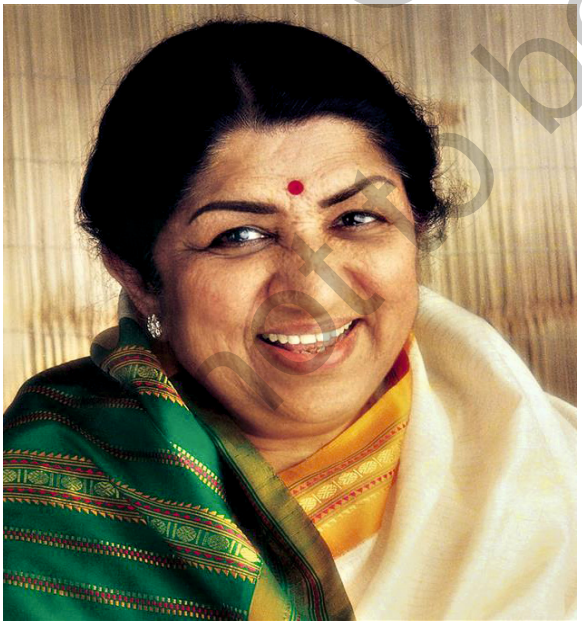

लता दीनानाथ मंगेशकर

प्रस्तुत पाठ में लेखक कुमार गंधर्व ने सुर साम्राज्ञी लता मंगेशकर के अद्भुत गायकी पर प्रकाश डाला है। उन्होंने लता मंगेशकर के गायन के विशेषताओं को उजागर किया है। उनके अनुसार चित्रपट संगीत में लता जैसी अन्य गायिका नहीं हुई। उनसे पहले प्रसिद्ध गायिका नूरजहाँ का चित्रपट संगीत में अपना जमाना था। लेकिन लता मंगेशकर उनसे भी आगे निकल गई। उन्होंने चित्रपट संगीत अत्यधिक लोकप्रिय बनाया। चित्रपट संगीत के कारण लोगों को स्वर के सुरीलेपन की समझ हो रही है। लता मंगेशकर का सामान्य मनुष्य में संगीत विषयक अभिरुचि पैदा करने में बहुत बड़ा योगदान है।

एक सामान्य श्रोता शास्त्रीय गान और लता के गान में से लता का गान ही पसंद करते हैं। इसका कारण है लता के गानों में गानपन का होना। गानपन का आशय है गाने की वह मिठास, जिसे सुनकर श्रोता मस्त हो जाए। लेखक के अनुसार उनके स्वर में निर्मलता उनके गानों की विशेषता है। जहाँ प्रसिद्ध गायिका नूरजहाँ के गाने में एक मादक उत्तान दीखता था, वहीं लता मंगेशकर के स्वरों में कोमलता और मुग्धता है। उनके गानों की एक और विशेषता है, उसका नादमय उच्चार। उनके गीत के किन्हीं दो शब्दों का अंतर स्वरों के आलाप द्वारा बड़ी सुंदर रीति से भरा रहता है। लेखक के अनुसार लता मंगेशकर ने करूण रस के गाने इतनी अच्छी तरह नहीं गाए हैं। उन्होंने मुग्ध श्रृंगार की अभिव्यक्ति करने वाले मध्य या द्रुतलय के गाने बड़ी उत्कटता से गाए हैं। लता का ऊँचे स्वर में गाना भी लेखक को उनके गायन की कमी

© JCERT not to be republished

लगती है। इसका दोष वह संगीत दिग्दर्शक को देते हैं जिन्होंने उनसे ऊँची पट्टी के गाने गवाए हैं।

चित्रपट संगीत गाने वाले को शास्त्रीय संगीत की उत्तम जानकारी होना आवश्यक है और यह लता मंगेशकर के पास निःसंशय है। शास्त्रीय संगीत और चित्रपट संगीत की तुलना नहीं की जा सकती है। शास्त्रीय संगीत की विशेषता उसकी गंभीरता है तथा चपलता चित्रपट संगीत का मुख्य गुणधर्म है। चित्रपट संगीत का ताल प्राथमिक अवस्था का ताल होता है, जबकि शास्त्रीय संगीत में ताल अपने परिष्कृत रूप में पाया जाता है। चित्रपट संगीत की विशेषता उसकी सुलभता और लोचता है। लता मंगेशकर का एक-एक गाना संपूर्ण कलाकृति होता है। उनके गानों में स्वर, लय और शब्दार्थ का त्रिवेणी संगम होता है। चाहे वह चित्रपट संगीत हो या शास्त्रीय संगीत, अंत में उसी का अधिक महत्त्व है जिसमें रसिक को आनंद देने का सामर्थ्य अधिक है। गाने की सारी ताकत उसकी रंजकता पर मुख्यतः अवलंबित रहती है।

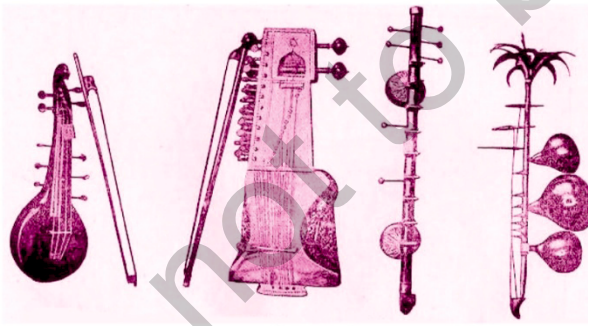

प्राचीन वाद्ययंत्र

संगीत के क्षेत्र में लता मंगेशकर का स्थान अव्वल दर्जे के खानदानी गायक के समान है। खानदानी गवैयों का दावा है कि चित्रपट संगीत ने लोगों के कान बिगाड़ दिए हैं। लेकिन लेखक का मानना है कि चित्रपट संगीत के कारण लोगों को संगीत की अधिक समझ हो गई है। लेखक के अनुसार शास्त्रीय गायकों ने संगीत के क्षेत्र में अपनी हुकुमशाही स्थापित कर रखी है। उन्होंने शास्त्र-शुद्धता के कर्मकांड को आवश्यकता से अधिक महत्त्व दे रखा है। आज लोगों को शास्त्र-शुद्ध और नीरस गाना नहीं, बल्कि सुरीला और भावपूर्ण गाना चाहिए। चित्रपट संगीत के कारण यह संभव हो पाया है। इसमें नवनिर्मिति की बहुत गुंजाइश है। बड़े-बड़े संगीतकार लोकगीत, पहाड़ी गीत तथा खेती के विविध कामों का हिसाब लेने वाले कृषिगीतों का भी अच्छा प्रयोग कर रहे हैं। इस प्रकार चित्रपट संगीत दिनोंदिन अधिकाधिक विकसित होता जा रहा है और इस संगीत की अनभिषिक्त साम्राज्ञी लता मंगेशकर हैं।

शब्दार्थ

- **मालिकाएँ** = स्वरों के क्रमबद्ध समूह
- **ध्वनिमुद्रिका** = स्वरलिपि
- **शास्त्रीय गायकी** = जिसमें गायन को निर्धारित नियमों के अंदर गाया-बजाया जाता है।
- **मालकोस** = भैरवी थाट का राग
- **त्रिताल** = यह सोलह मात्राओं का ताल है।
- **द्रुतलय** = तेज लय
- **ऊँची पट्टी** = ऊँचे स्वरों का प्रयोग
- **जलदलय** = द्रुतलय

© JCERT not to be republished

- **लोच** = स्वरों का बारीक मनोरंजन प्रयोग
- **तैलचित्र** = जिस चित्र में तैलीय रंगों का प्रयोग किया जाता है।
- **पर्जन्य** = बादल
- **अभिषिक्त** = बेताज

इन्हें भी जाने

- **लता मंगेशकर का पूरा नाम** लता दीनानाथ मंगेशकर।
- **जन्म** 8 सितंबर 1929 इंदौर।
- **पिता का नाम** पंडित दीनानाथ मंगेशकर।
- **माता का नाम** सेवंती मंगेशकर।
- **बहन–** आशा भोंसले, उषा मंगेशकर, मीना मंगेशकर, भाई हृदयनाथ मंगेशकर

मान-सम्मान और पुरस्कार

लता मंगेशकर को ढेरों पुरस्कार और सम्मान मिले। जितने मिले उससे ज्यादा के लिए उन्होंने मना कर दिया। 1970 के बाद उन्होंने फिल्मफेअर को कह दिया कि वे सर्वश्रेष्ठ गायिका का पुरस्कार नहीं लेंगी और उनकी बजाय नए गायकों को यह दिया जाना चाहिए। लता को मिले प्रमुख सम्मान और पुरस्कार इस तरह से हैं:

भारत सरकार पुरस्कार

1969 – पद्म भूषण

1989 – दादा साहेब फाल्के पुरस्कार

1999 – पद्म विभूषण

2001 – भारत रत्न

राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार

1972 – फिल्म 'परी' के गीतों के लिए सर्वश्रेष्ठ महिला पार्श्व गायिका का राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार।

1974 – फ़िल्म 'कोरा कागज़' के गीतों के लिए सर्वश्रेष्ठ महिला पार्श्व गायिका का राष्ट्रीय फ़िल्म पुरस्कार।

1990 – फिल्म 'लेकिन' के गीतों के लिए सर्वश्रेष्ठ महिला पार्श्व गायिका का राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार।

प्रश्न-अभ्यास

1. लेखक ने पाठ में गानपन का उल्लेख किया है। पाठ के सन्दर्भ में स्पष्ट करते हुए बताएँ कि आपके विचार में इसे प्राप्त करने के लिए किस प्रकार के अभ्यास की आवश्यकता है?

उत्तर— लेखक ने पाठ में गानपन का अर्थ हैं- गाने से मिलने वाली मिठास और सुरीला गाना जो एक इंसान को भावपूर्ण कर दें। मिठास श्रोता को आनंदित कर देती है।

जिस प्रकार मनुष्यता हो तो वह मनुष्य है, उसी प्रकार संगीत की विशेषता उसका

© JCERT not to be republished

गानपन होता है। लता मंगेशकर के गानों में भी गानपन मौजूद रहता है। इसे प्राप्त करने के लिए गायन में निर्मलता होना तथा गाने का नियमित अभ्यास करना आवश्यक है।

2. लेखक ने लता की गायकी की किन विशेषताओं को उजागर किया है? आपको लता की गायकी में कौन-सी विशेषताएँ नज़र आती हैं? उदाहरण सहित बताइए।

उत्तर— लेखक ने लता की गायकी की निम्नांकित विशेषताओं को उजागर किया है:

गानपन- गानपन का अर्थ है गाने का वह अंदाज है जो एक आदमी को भी भावविभोर कर दे। लता मंगेशकर के गानों को सुनकर श्रोता मुग्ध हो जाते हैं।

स्वरों की निर्मलता- लता के गाने की एक और विशेषता है, उनके स्वरों की निर्मलता। उनके स्वरों में कोमलता है।

नादमय उच्चार- लता के गाने की एक और विशेषता है, उसका नादमय उच्चार। उनके गीत के किन्हीं दो शब्दों का अंतर स्वरों के आलाप द्वारा बड़ी सुंदर रीति से भरा रहता है।

सुरीलापन- उनके सुरीले गीत श्रोताओं को बहुत पसंद हैं।

उच्चारण की शुद्धता- उनके गाने में उच्चारण की शुद्धता पाई जाती है।

3. लता ने करुण रस के गानों के साथ न्याय नहीं किया है, जबकि श्रृंगारपरक गाने वे बड़ी उत्कटता से गाती हैं- इस कथन से आप कहाँ तक सहमत हैं?

उत्तर— लेखक का यह कहना कि 'लता ने करुण रस के गानों के साथ न्याय नहीं किया है, जबकि श्रृंगारपरक गाने वे बड़ी उत्कटता से गाती हैं' से मैं सहमत नहीं हूँ। लता मंगेशकर ने 'ऐ मेरे वतन के लोगों' गाना इतनी भावुकता तथा करूणा भरे स्वर में गाया है कि उसे सुनकर अभी भी हमारे आँखों में आँसू आ जाते हैं। उनके द्वारा गाए गए अनेक गीत करुण रस से भरे हुए हैं और वे लोकप्रिय भी हैं। इस प्रकार यह कहना उचित नहीं होगा कि लता ने करुण रस के गानों के साथ न्याय नहीं किया है।

4. संगीत का क्षेत्र ही विस्तीर्ण है। वहाँ अब तक अलक्षित, असंशोधित और अदृष्टिपूर्व ऐसा खूब बड़ा प्रांत है तथापि बड़े जोश से इसकी खोज और उपयोग चित्रपट के लोग करते चले आ रहे हैं-इस कथन को वर्तमान फ़िल्मी संगीत के संदर्भ में स्पष्ट कीजिए।

उत्तर— संगीत का क्षेत्र अत्यंत व्यापक और विस्तृत है। इसमें बहुत से राग, स्वर, ताल और धुनें ऐसी हैं, जिनमें बहुत से सुधार होने बाकी हैं। वर्तमान फ़िल्मी संगीत में प्रतिदिन नई धुनों तथा नए स्वर का प्रयोग किया जा रहा है। इसमें शास्त्रीय संगीत के साथ-साथ लोकगीत, पाश्चात्य संगीत तथा प्रांतीय गीतों को भी स्थान दिया जा रहा है। आजकल लोकगीतों का पाश्चात्य गीतों के साथ अच्छा तालमेल देखा जा रहा है। इस प्रकार वर्तमान फ़िल्मी संगीत में बड़े जोश के साथ नए प्रयोग किए जा रहे हैं।

© JCERT not to be republished

5. चित्रपट संगीत ने लोगों के कान बिगाड़ दिए- अकसर यह आरोप लगाया जाता रहा है। इस संदर्भ में कुमार गंधर्व की राय और अपनी राय लिखें।

उत्तर— कुमार गंधर्व इस बात से सहमत नहीं हैं कि चित्रपट संगीत ने लोगों के कान बिगाड़ दिए। उनके अनुसार चित्रपट संगीत ने संगीत में कई सुधार लाए हैं। इसके कारण ही लोगों को संगीत के सुरीलेपन की समझ हो रही है। चित्रपट संगीत समाज की संगीत विषयक अभिरुचि में प्रभावशाली मोड़ लाया है।

मेरे विचार से वर्तमान फ़िल्मी दुनिया में चित्रपट संगीत शोर से भरा और तनाव पैदा करने वाला बन गया है। जहाँ पुराने संगीतों में सुरीलापन होता था, वहीं आजकल के नए गानों में बेतुकी, अश्लील तथा अजीब सी तुकबंदी होती है। कई ऐसे भी गाने बन रहे हैं जो आज की व्यस्त जिन्दगी में मन को सुकून पहुँचाते हैं।

6. शास्त्रीय एवं चित्रपट दोनों तरह के संगीतों के महत्त्व का आधार क्या होना चाहिए? कुमार गंधर्व की इस संबंध में क्या राय है? स्वयं आप क्या सोचते हैं?

उत्तर— कुमार गंधर्व के अनुसार शास्त्रीय एवं चित्रपट दोनों तरह के संगीतों के महत्त्व का आधार रंजकता होना चाहिए। शास्त्रीय संगीत हो या चित्रपट संगीत, अंत में रसिक को आनंद देने की सामर्थ्य किस गाने में कितना है, इस पर उसका महत्त्व निर्भर करता है। गाने की सारी मिठास, सारी ताकत उसकी रंजकता पर मुख्यतः अवलंबित रहती हैं। शास्त्रीय संगीत भी रंजक न हो, तो बिलकुल ही नीरस होगा। इस प्रकार मैं भी लेखक की इस बात से सहमत हूँ कि एक अच्छे संगीत में कोमलता, मधुरता तथा गानपन का होना अत्यंत आवश्यक है।

© JCERT not to be republished